Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

छोटे बुतों का बयान

अब्दुल बिस्मिल्लाह

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

अब्दुल बिस्मिल्लाह की कविताएं हमारे समय की थाह लेने वाली, हमारे समय से उलझने वाली कविताएं हैं। युवा कवि अब्दुल बिस्मिल्लाह का संसार मध्यवर्गीय मनुष्य की नियति से लेकर क्रूर अमानवीय व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष तक फैला है। उसमें तार्किक और अतर्क्य सच्चाइयों का दिलचस्प भाषाई संगठन कभी-कभी एक अनोखा काव्यात्मक अर्थ प्राप्त करता है। अब्दुल बिस्मिल्लाह में बहुत कुछ एक साथ कहने की आतुरता भी है और उसे संगठित करने का कलात्मक संयम भी। यह कहना शायद उतना सच नहीं होगा कि अब्दुल बिस्मिल्लाह ने अपनी अलग विशिष्ट पहचान नहीं बनाई है—पर यह कहना अनिवार्य रूप से सच होगा कि अब्दुल बिस्मिल्लाह ने अपनी कोई खास रूढ़ियां नहीं बनाई हैं। उनके अनुभवों की दुनिया पूरी तरह खुली हुई है—संकीर्णताओं से मुक्त—इसीलिए उनके पाठक उनकी संभावनाएं सीधे लक्ष्य कर सकेंगे।

—परमानंद श्रीवास्तव

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

Gandhi Memorial College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu
Acc No. 9940
Dated 27.12.2013

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

छोटे बुतों का बयान

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

मूल्य : 20.00

छोटे बुतों का बयान (कविता संग्रह) © अब्दुल बिस्मिल्लाह, प्रथम संस्करण : 1982, आवरण : अनिल करंजई, प्रकाशक : संभावना प्रकाशन, रेवती कुंज, हापुड़-245101, मुद्रक : हरिकृष्ण प्रिंटर्स, शाहदरा-दिल्ली-32

CHOTEY BUTO KA BAYAN (Poems) by Abdul Bismillah

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

छोटे बुतों का बयान

16.5.83

अब्दुल बिस्मिल्लाह

संभावना प्रकाशन, हापुड़-245101

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

क्रम

शाम होने से पहले / 9
मेरी चिड़िया / 10
वे और उनके बच्चे / 12
बीर बहूटी / 13
हवा / 15
मेरी कविता / 16
कांच के खेल / 18
बच्चे के प्रति / 19
भूगोल / 21
इतिहास / 22
कलजुगी नरायन / 24
कच्ची आंखों का दर्द / 26
लड़ाई / 28
नन्हीं ज़ंजीर / 29
क्रान्तिदूत / 31
तब मैं नहीं जानता था / 33
जंगल में उठा हुआ हाथ / 35
लोहे के ख़िलाफ़ / 37
ढोर / 38
पहाड़ के आरपार / 41
चील की बेटी / 42
आग का जंगल / 43
एक लोकतांत्रिक देश का बकरा / 44
जंगल की आग / 46
कबूतरी का विलाप / 47
टिड्डी-दल / 51

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

शिकारी आएगा / 52
पलाश के हत्यारे वर्ण / 54
नीला आदेश / 55
खोया हुआ सूर्य / 57
बहुरूपिया / 58
वृक्ष-विरोधी / 62
फ़र्माने ख़ुदावन्दी / 64
नयी सृष्टि का जन्म / 67
चाकू पर रखी कविता / 69
मालिकाना सलूक / 70
पेड़ या आदमी / 72
छोटे बुतों का बयान / 73
ठोस बांस / 76
इस समुद्र में / 78
पागल / 79

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

छोटे बुतों का बयान

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

शाम होने से पहले

शाम होने से पहले
इस पहाड़ को मैं
खोद डालना चाहता हूं
जिसकी चोटियों पर
बघनखों का जंगल
दिन-ब-दिन घना हो रहा है

शाम होने से पहले
इस शक्ल को मैं
तोड़ डालना चाहता हूं
जिसकी उंगलियों में
वह किताब फंसी है
जो आदमी को
बुत बनाया करती है

शाम होने से पहले
इस सड़क को मैं
बना लेना चाहता हूं
जिस पर कल
वे सब चल सकेंगे
जो आज मेरा
मज़ाक उड़ा रहे हैं

4. 11. 80

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

मेरी चिड़िया

मेरी चिड़िया
खबर लेकर आयी है
कि सूर्य के सामने
किसी ने फिर पर्वत उगा दिया है

खबर देते ही
उसकी चोंच पर
अंधेरा छा गया है
आंखों में
ग्लेशियर उमड़ा है
और परों में
समुद्र फैल गया है

मुझे उसके जिस्म पर
मृत्यु का चेहरा दिखाई पड़ता है
और लगता है
कि वह कितनी दयनीय है

मगर मेरी चिड़िया कहती है
कि मौत को
एक सदमे के रूप में लेना
ज़िन्दगी की
सबसे बड़ी साज़िश है

और
वह मुर्दों की
एकता की बात करती है
लेकिन मैं कहता हूं
कि मेरी चिड़िया
पहले उस पर्वत को हटाना ज़रूरी है

 CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

जो मुर्दों के घरों पर जमा है

मेरी चिड़िया
चलो
मैं पर्वत को खोदूंगा
और तुम
मेरे कंधे पर बैठकर
मुझे तूफ़ान की सूचना दोगी
बाढ़ से सचेत करोगी
और जब मैं ऊंघने लगूंगा
तुम अपनी नन्हीं चोंच
मेरी गर्दन में चुभा दोगी
या मेरे सामने
कोई लड़की जब
स्तनों में आग जलाए
उपस्थित होगी
तुम मेरी आंखों में
फड़फड़ाओगी
और अपने परों के झकोरों से
आग को
बुझाने की कोशिश करोगी

इस प्रकार मैं
पर्वत को खोद कर
सूर्य को आज़ाद करूंगा
और वह
धरती के पेट में घुटते मुर्दों
व छाती पर नाचते ज़िन्दों को
किरनों का शरबत पिलाएगा
तब तुम मस्ती के आलम में होओगी
और मैं तुम्हें
क़मीज़ में डालकर
प्यार करूंगा

18. 7. 78

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

वे और उनके बच्चे

कपास के सारे पौधे हमने
टोपियों के लिये चुन लिये
और वे
लंगोटियों का ख़्वाब देखते रहे

वे इंतज़ार करते रहे
कि बालियों का दूध जमे
और हमने उन्हें
मदिरालय के लिये
तोड़ लिया

हम हवा में भरते रहे ख़ुशबू
और वे क़र्ज़ मांगते रहे सांस

वे सोचते रहे
कि हम ज़रा मुस्कराएं
और हम
उनकी मूढ़ता पर खिलखिलाते रहे

हम अपने बच्चों को
पटाखे दिलवाते रहे
और उनके बच्चे
बंदूक चलाना सीख गये

6. 2. 80

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

बीरबहूटी

तुम अपनी पीठ पर
लाल मखमल का गलीचा लादे
गलियों में क्यों घूम रही हो

यह गलीचा
तुम किसके लिये लेकर आयी हो
तुम मौन क्यों हो
तुम इन बच्चों की हथेलियों पर
क्यों खेल रही हो
पेड़ों से झरती
हरी बारिश में
तुम यह गलीचा कहां ले जा रही हो
तुम तो अभी बहुत छोटी लगती हो
इस उम्र में अपनी पीठ पर तुम
उत्तरदायित्व क्यों ढोती हो

झुण्ड में रहकर भी
तुम कमज़ोर क्यों दिखती हो

तुम गलीचे की जगह
कारतूस क्यों नहीं ढोतीं

संस्कृति में अब
सिर्फ़ युद्ध ही बचने वाला है
इसलिये अपनी टांगों को तुम
बारिश की धरती पर घिसकर
खत्म मत करो
जेठ की ज़मीन के लिए उन्हें
सुरक्षित रखो
और ख़ून को

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

सौन्दर्य के चक्कर में
ज़ाया न करो
उसे संचित करो
गलीचे के शासन से
दुनिया को आज़ाद करने के लिये
और अपनी पीठ पर
एक मखमली सुबह उगाने के लिये

8. 6. 80

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

हवा

हवा
बगीचे में जाकर
फूलों पर अब
लेटेगी नहीं

हवा
सुबह-सवेरे
गंगा-किनारे अब
टहलेगी नहीं

हवा ने
लड़की के बालों की
बात भी
टाल दी है

हवा अब
उस मकान की खिड़कियों को
तोड़ेगी
जिसमें बरसों से
आज़ाद नाम का बूढ़ा
क़ैद है

11. 3. 80

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

मेरी कविता

मेरी कविता
चोंच है गौरैये की
बच्चों के मुंह में
चारा रखने वाली

और यह
चोंच है कठफोड़वे की
पेड़ में
छेद बनाने वाली

संभव है
पेड़ भी हो यह
अपने कंधों पर
घोंसले लादने वाला
पर्व के बंगले पर
भहराने वाला

लेकिन मेरी कविता
बंगला नहीं है
जिसमें
कच्ची उम्र की लड़कियां
नाच
और इश्क का
अभ्यास करती हैं

मेरा ख़याल है
यह एक दरबा है
जिसमें
चूज़ों की
एक नन्हीं मुन्नी दुनिया

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

दीवारों पर
अपनी चोंच घिस रही है
धान के किसी दाने से
चावल निकालने के लिये
और किसी शाही मुर्ग़ से
युद्ध के वास्ते !

22. 5. 80

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

कांच के खेल

उनका सम्बन्ध
उस इमारत से है
जिसमें हर रोज़
प्यालियां और झाड़-फानूस
तोड़े जाते हैं
और कांच के टुकड़े
फेंके जाते हैं सड़क पर

सड़क
उन पांवों के नीचे
बिछी हुई है
जिनमें चुभते हैं कांच के टुकड़े
और जिनके प्रहार से
उस छत को बैठना है
जो इमारत के सिर पर
सदियों से
तनी हुई है

और उन्हें
सड़क पर आना है
जो इमारत में बैठकर
कांच के खेल खेलते हैं

18. 3. 80

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

बच्चे के प्रति

तुम फोड़ोगे
अपने नन्हें घूंसे से
मूंगफली
और भीतर से
निकालोगे
चांद का दाना
एक भूखी ईद के लिए

मैं जानता हूं
कि तुम
तोड़ोगे चट्टान
और दरार में छिपे
कीड़े को
पहुंचाओगे
एक हरी दूब
आदमी की तरह
जिबरील* की तरह नहीं

और तुम
गोड़ोगे धरती
बम के पलीते को
दबाने के लिये नहीं
लगाने के लिये
मूंगफली
जिसे फोड़ेगी तुम्हारी संतान
चांद के दाने के लिये

*जिबरील एक फ़रिश्ते का नाम है। एक बार जब फ़िरऔन नामक एक बादशाह को यह घमण्ड हो गया कि सारी सृष्टि का पेट मैं ही भरता हूं तो जिबरील ने एक चट्टान तोड़कर उसकी दरार में बैठे कीड़े को उसे दिखाया था जिसके मुंह में चारा था और फ़िरऔन से पूछा था, 'क्या इसके मुंह में भी तुम्हीं ने चारा पहुंचाया है ?'

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

तुम खोदोगे इस खम्भे को
जो मुद्दतों से यहां गड़ा है
और लोगों ने जिसे
दांतों से पकड़ रक्खा है
जिस पर अल्लाहों
और उनकी किताबों के
आलेख अंकित हैं

तुम
अपनी हथेलियों की छाप
इस पर लगाओगे
और उनकी रेखाओं के नाम
ज्योतिष् की किताब से नहीं
कविता की किताब से लिखोगे
जिसके अक्षर
स्याही से नहीं
इस्पात के छर्रों से बने हैं

मैं जानता हूं
तुम फोड़ोगे
मूंगफली
चांद के दाने के लिये
और चांद के पत्थर
टकराएंगे
तुम्हारी नन्हीं खोपड़ी से
लेकिन मैंने देखा है
कि जब जब ऐसा हुआ है
खोपड़ी मज़बूत हुई है
पत्थर टूट गये हैं

25. 5. 80

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

भूगोल

कितने दिन गुज़र गये
उस कोठरी से
इस कोठरी में आये हमें
पर नहीं दिखाई दिया वह सूर्य
जो यहां
द्वार पर मिलने वाला था
कितना समय बीत गया
हमें हंसे हुए
कि हमारे गालों पर
आंखों ने जो दलदल बनाये थे
वे सूख कर दरक गये हैं
और कोठरी में बैठे-बैठे
हम अनुमान लगा रहे हैं
कि अगली कोठरी का
भूगोल क्या होगा
इतिहास क्या होगा

26. 10. 80

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

इतिहास

टीले पर
उस बरगद को आसन जमाए
ज़माना गुज़र गया

उस पर कई कई बुढ़ापे आये
और वह निरंतर पुराना होता गया
चमड़ी स्याह हो गयी
लटें ज़मीन में धंस गयीं
वह मुस्कराता रहा

युगों पूर्व
उसके आसपास
टेसू के कुछ बच्चे उगे थे
जवान, फिर वृद्ध होने की लालसा लिये

वे बच्चे ही रह गये
तन सख़्त होता गया
पर मन बौना रहा
अपने कानों से वे
चाहते थे सुनना
बरगद की खांसियां
पर आंखों से देखते रहे
उसके जिस्म पर लटकती
मीठी रुद्राक्ष मालाएं

और वे ओस पी-पीकर
जीभ चटखारते रहे
अनुभव करते रहे
पांवों में निरंतर
उसकी लटों का चुभना

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

और रक्त का
बूंद बूंद होकर निचुड़ना

बच्चे सफ़ेद होते रहे
बूढ़े की छाती पर
लाल लाल रुद्राक्ष मालाएं
लटकती रहीं

8. 5. 78

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

कलजुगी नरायन

वह एक सायकिल थी
जिसके पहियों में
ट्यूब-टायर की जगह
टाट के टुकड़े बंधे थे
गद्दी की जगह
बांस के टूटे पंखे लगे थे
न उसमें पिछली ब्रेक थी, न अगली
और चेन में ज़ंग लगा था
उस सायकिल पर जो बैठा था
वह एक आदमी था
वैसे पहले वह एक कॉलेज का चपरासी था
जो प्रिंसिपल से भी
ईमानदारी जैसी गंदी चीज़ पर
बात करता था
इसलिये निकाल दिया गया
उसके शरीर पर मैल
इस प्रकार दिखता था
जैसे किसी ज़माने में
कवियों के गोरे मुखमण्डल पर
काले केश दिखते थे
उसकी कमर में
टूटी अदवाइन का एक टुकड़ा बंधा था
और एक कपड़ा उसे
दोनों ओर लापरवाही के साथ
पकड़े हुए था
उस कपड़े के अलावा
एक और कपड़ा उसके जिस्म पर था
जिसका नाम किसी शब्दकोष में नहीं मिला
पांवों में चप्पलों के तल्ले
कपड़े के टुकड़ों से ऐसे बंधे थे

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

जैसे किसी कैलेण्डर में
वल्कल से
मादा भगवान के कुच

उस कलजुगी नरायन को मैंने
उन महात्मा के आश्रम के आसपास
टहलते देखा है
जिन्हें जब माइक पर पुकारा जा रहा था
कि अमुक महात्मा जहां कहीं भी हों
मंच पर चले आएं
तब वे लोगों को
यह समझाने में व्यस्त थे
कि आश्रम में किसी चीज़ की कमी नहीं है
लोग उन्हें बदनाम करने के लिये
कष्ट झेल रहे हैं

13.3.77

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

कच्चीं आंखों का दर्द

तुम लोग जब
लड़ते हो
बदहोश रहते हो

चाहे वह
घरेलू लड़ाई हो
युद्ध हो
या चुनाव

उस वक़्त तुम्हारे
द्वार पर
नंग-धड़ंग
मैली-कुचैली
दो कच्ची आंखें
राहगीरों से
पूछती हैं
अपनी पुतलियों का
भविष्य
और उत्तर में
गूंजती हैं
जानी-पहचानी
सिसकियां
तड़कते हैं
जाने-पहचाने
प्रहार

फिर अचक्के में
द्वार तक आ जाती है
लड़ाई
और टूट जाते हैं

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

जाने-पहचाने
दूध के कुछ दांत

दहलीज़ पर
उभरती हैं
खून की ज़िन्दा लकीरें

लेकिन बताना मुश्किल है
कि लहू
टूटे हुए दांतों से गिरा है
या
उन कच्ची आंखों से
जिनकी पुतलियों का भविष्य
लड़ाई की भाषा में
लिखा जा रहा है

16.5.80

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

लड़ाई

यह लड़ाई क्या रुक नहीं सकती
बहुत गहरे हो गये हैं दांतों के निशान
और बहुत स्याह हो गयी हैं
बेंतों की लकीरें

बहुत सारे वस्त्र
चिंदियों में बदल गए हैं
और फ़र्श पर पड़ी हैं
कांच की बहुत सारी किरचें

अर्द्धरात्रि तक अंधेरे में चमकी हैं
पाशविक आंखों की चिनगारियां
और भूखे रोते बच्चे
ठण्डे चूल्हे पर बैठ कर
देते रहे हैं बद्दुआएं

बच्चों की बद्दुआएं मत लो
बच्चे शिरीष के फूल हैं
उन्हें लड़ाई के नाखूनों से मत छुओ
उनकी दंतुलियों से
दूध का अर्थ सीखो
प्यार के पौधे में निहित हैं
दूध के झरने
प्यार के हरे रहस्य पर
नाखून मत गड़ाओ
झरने रीत जाएंगे

27.5.77

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

नन्हीं ज़ंजीर

मुझे अपनी बेटी का
वह चेहरा याद आता है
जो कमरे में खड़ी चारपाई के
पीछे सिसक रहा था
मुझसे रूठ कर
क्योंकि मैं उसे
साथ में बाज़ार लाने को
तैयार नहीं था

मैं सोचता हूं
कि उसे खुश करने के लिये
कौन सी चीज़ खरीदूं
और दूकानों पर सजी वस्तुओं को
देखता हूं
मैं देखता हूं पीतल के थालों में सजी
जलेबियों को
ठेलों पर खड़ी बीबियों को
और पटरी पर बिखरी
मिट्टी की चिड़ियों को
पर मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता

फिर मैं लोहे की एक दूकान पर
खड़ा हो जाता हूं
वहां अनेक छोटी बड़ी ज़ंजीरें लटक रही हैं
जिन्हें मैं देखता हूं

मुझे याद आती है
वह मज़बूत हथकड़ी
जो इसी बाज़ार में मुझे पहनायी गयी थी
सिर्फ़ एक तानाशाह की

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

जय न बोलने की एवज़ में

और याद आती है मेरी बेटी
जो चारपाई के पीछे खड़ी
सिसक रही थी
उसकी कलाइयां
जिनमें बैंगनी चूड़ियां चमक रही थीं

यह नन्हीं ज़ंजीर
मैं उसे दूंगा
और कहूंगा
प्यारी बेटी
चूड़ियां फोड़ दो
कलाइयों में ज़ंजीर बांधने का
अभ्यास करो

25.5.77

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

क्रान्ति दूत

उस दिन एक बैल ने क्रान्ति कर दी
दरअसल वह भूखा था
और किसी ने उसकी भूख को
गंभीरता से नहीं लिया था
वह रात में खुले आकाश-तले लेटता था
और उसके आवास की आवश्यकता को
लोगो ने उसे पशु समझकर टाल दिया था
सुनने में तो यह भी आया है
कि दोपहर के वक़्त
चौक इलाक़े में उसे नंगा घूमते देख
समाज के कुछ भद्र पुरुषों ने
उस पर लाठी चार्ज भी किया था
जिनकी क्वांरी कन्याएं
सिर्फ़ शरीफ़ पतियों के सामने
निकलती हैं
और बैलों से डरती हैं

बहरहाल
पिछले दिनों
उस बैल की ज़िन्दगी से
इस प्रकार खेला गया
जैसे बहेलिये का बच्चा
मरे हुए तोतों से खेलता है

तब वह चला
और घुस गया एक प्रसिद्ध होटल में
देखते ही देखते
होटल के आदमी
धंस गए उसकी सींगों में
और फ़र्नीचर सड़क पर भाग गया

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

सिर्फ़ एक घण्टे के अन्दर
होटल के कमरे और खाने पर
बैल का अधिकार हो गया

फिर उसने खिड़कियों के पर्दों को
ओढ़ लिया
और क़ौम के नाम संदेश दिया
जिसमें उसने कहा
कि इसके अलावा
मैं और क्या करता

16.3.77

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

तब मैं नहीं जानता था

उस रोज़
जब रामफूल की झाड़ी में
लुका-छिपी खेलते हुए
मेरी जांघ में
उसके कांटे चुभे थे
तब मैं नहीं जानता था
कि झाड़ी से बाहर
कांटों की पूरी दुनिया
जवान हो रही है

ठीक इसी तरह
उस रात
जब अपनी झोपड़ी में
लेटे हुए
मैंने अपने ऊपर
छप्पर से लटकते हुए
एक सांप को देखा था
और पिताजी से
उसका वध कराया था
तब मैं नहीं जानता था
कि एक रोज़
मेरी ही शक्ल का एक प्राणी
मेरे ऊपर लटकेगा
और डण्डा उठाने से पहले ही
या तो वह
लद से गिर पड़ेगा
पेट पर
या
धीरे से
मुस्करा उठेगा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

और उस रोज़
जब मैं सरपंच के बेटे से लड़कर
कांस के फूलों से घिरे
नर्मदा के उस कछार में
एक चट्टान पर बैठा था
और मेरे हाथ में
नदी का एक गोल, चिकना पत्थर
नाच रहा था
तब मैं नहीं जानता था
कि आने वाले दिनों में
मेरे इसी हाथ में
कविता नाचेगी

3.2.81

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

जंगल में उठा हुआ हाथ

आओ
वहां पत्तों के पीछे
क्यों छिपे हो
पत्ते
विश्वासघाती हैं

डर
वहां पत्तों में बन्द है
जंगली बिच्छू की तरह

उसके लिये
रोशनी का इंतज़ाम करो
लकड़ियां गीली हैं तो क्या हुआ
उन्हें आग के साथ रखो
जलना वे ख़ुद सीखेंगी
और तुम्हारे लिये
रोशनी का दूध देंगी
अपने गीले जिस्म को
ख़त्म करके

तुम यह भी नहीं कर सकते
तो इतना करो
कि जंगल में जब
किसी ख़तरनाक शोर का
दरिया बहे
तुम अपना हाथ उठा दो
मैं जानता हूं
तुम्हारे हाथ इतने कमज़ोर नहीं हैं

और सुनो

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

पत्तों के बाहर
अपने कान कर लो
मेरी बात इसलिये धीमी है
कि जंगल का शोर
उससे तेज़ है

सुनो
मेरे लिए
जंगल में उठे हुए हाथ का
बहुत महत्व है
क्योंकि जंगल में
जहां पेड़ ही पेड़ हैं
पत्तों से ग्रस्त
वहां किसी हाथ का होना
एक सुखद संकेत है
और मुझे विश्वास है
कि तुम
इस संकेत को
समझते हो

14.2.81

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

लोहे के ख़िलाफ़

मैं जब कह रहा था
कि ख़ून में गुलाबों को मत सानो
जल के सामने निर्वस्त्र होकर मत आओ
यह म्यान सीधी है
इसमें अपनी टेढ़ी-मेढ़ी तलवार मत डालो
तब मेरे पीछे
निशाचर लगाये जा रहे थे
और मुझे
शाप देने का अभिनय किया जा रहा था
अब सारे के सारे गुलाब
विरुद्ध हो गये हैं
जल सच बोल रहा है
तलवार टूट गयी है
और मैं देख रहा हूं
कि सूरज राहु को निगल गया है
पर, यह सिर्फ़ एक मौक़ा है
जिसमें
ज़रूरत है
कि मांस का पुतला
लोहे के ख़िलाफ़ खड़ा हो

21.3.77

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

ढोर

एक ढोर है
जिसकी पीठ पर
घाव है
कौवे
जिस पर चोंच मार रहे हैं

जंगल में सुरक्षा-गाड़ियां खड़ी हैं
और झाड़ियों में
राइफलें तनी हैं

मैं नहीं समझता
कि लोग ढोर के बारे में
आखिर क्यों चिंतित हैं
ढोर आखिर ढोर है
जिसे एक मुद्दत से
खली में बहलाया गया है
दाम तो
उसके भी अब चढ़ गये हैं
जिनके उतरने की खबर
केवल अखबार दे रहे हैं

अर्थात् चलनियां
सच बोलने की कोशिश कर रही हैं

खली खाने वाला
इनकी निगाह में शायद
क्रान्ति नहीं कर सकता
तब क्यों राइफलें तनी हैं
सुरक्षा-गाड़ियां खड़ी हैं

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

मैं समझता हूं
ढोर के लिये सुरक्षा-गाड़ियों का
इस तरह परेशान होना
उचित नहीं है
इन्हें उन महलों की ओर मार्च करना चाहिए
जिनमें बादशाह लोग क़ैद हैं

वैसे
26 जून, 1975 को
जो धूमकेतु उगा था
22 मार्च, 1977 के बाद से
उसका रुख़ बदल गया है
(वह डूबा नहीं है)
लेकिन ढोर का क्या है
वह 1975 में भी खली खा रहा था
1977 में भी खली खाता रहा है
अब भी वही खा रहा है

पहले भी उसकी पीठ पर घाव था
अब भी है
फ़र्क़ केवल इतना हुआ है
कि तब कौवों को चोंच मारने की स्वतंत्रता नहीं थी
अब उनके चोंच स्वच्छन्द हो गये हैं
फिर भी ढोर
हर हाल में ख़ुश रहता है
बादलों का रेवड़ हो
और गड़रिये का बच्चा सुरुज परकास
सिर पर छतरी लगाये
रेवड़ में डूबा हो
झीनी झीनी फुहार पड़ती हो
इतना काफ़ी है उसके ख़ुश होने के लिये
घास सूखी है तो क्या हुआ
पानी में भीग जाने से ताज़ा हो जाती है (?)

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

ढोर को उसमें हरियाली महकती है
खली का मिलना तो
सरकार की कृपा है
ढोर ने कृपा खाने से कभी इनकार नहीं किया है

एतराज़ केवल सुरक्षा-गाड़ियों पर है उसे
दरअसल बात कहने की नहीं है
पर बात आ गयी है तो सुन लीजिए
आजकल ढोर
मिट्टी के ढूहों को
ध्वस्त करने का प्रशिक्षण ले रहा है
अत: सुरक्षा-गाड़ियां हटा ली जाएं
कहीं वे ढूह न समझ ली जाएं
वरना गाड़ियों को कुछ हो गया
तो ऐन मौक़े पर
बादशाह सलामत परेशान हो जाएंगे
ढोर के बारे में
कुछ कहा नहीं जा सकता
रही कौवों की बात
तो ऐसे क्षणों में ढोर
बादशाह और कौए में
कोई भेद नहीं करता

1977-78

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

पहाड़ के आर पार

रोशनी की नहर को तुम
पहाड़ के इस पार
मत आने दो
सूर्यमुखी के खेतों को हम
उस पार नहीं जाने देंगे

नहर तुम्हारी
बंद पड़ी पड़ी
ऊबेगी जब
तो उसके विस्फोट से
तुम्हारे नेत्र
पत्थरों में बदल जाएंगे
और हम
अपने खेतों को
पसीने से सींच लेंगे
आंखों के लिये
भीतर की आग को
पत्थरों पर जला लेंगे

14.5.80

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

चील की बेटी

जब उसके जिस्म पर
रोएं नहीं थे
और जब वह
लाल मांस की तरह
गुलगुल और सुंदर लग रही थी
तब ख़ुदा की क़सम मैंने उसे
गौरैया ही समझा था

हालांकि उसकी चोंच
उसके पंख
और पंजे
अपनी सुंदरता में भी
कुछ भयानक ज़रूर थे
पर ख़ुदा की क़सम मैं यह नहीं जानता था
कि जिसको मैं
चांदी के पिंजरे में रखकर
दिन-रात निहारता हूं
वह बड़ी होकर
गौरैया नहीं
चील की बेटी निकलेगी
और
मेरे सपनों की उस दूसरी गौरैया को भी
खा जाएगी
जिसे कितनी हसरत से मैंने
इसकी दोस्ती के लिए मन में पाला था
हालांकि ख़ुदा की क़सम मैं चाहता तो
इस चील की बच्ची को
मेरे मन की गौरैया
पहले ही खा सकती थी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

आग का जंगल

शब्दों को
इस तरह मत झिझोड़ो
चिटके हुए स्तवकों से
चिनगारियों के बीज गिरेंगे तो
आग का
एक जंगल उगेगा
और उसके फूलों से
तुम्हारा वह महल जलेगा
जिसमें तुमने
उन होंठों को
बन्द कर रखा है
जिनके कठघरे से निकलकर
ये शब्द
मेरे होंठों तक पहुंचे हैं
इनका हर अक्षर
भभक रहा है
इन शब्दों को
मत छेड़ो

31.8.80

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

एक लोकतांत्रिक देश का बकरा

रात भर पानी बरसा है
और वह बकरा
अपनी कोठरी में अण्डे की तरह उबला है
जिसने हर नये महोदय के स्वागत में
अपना एक बेटा उत्सर्ग किया है
और जिसकी वृद्धा पत्नी को
वह गिरोह खा गया है
जिसे नये महोदय ने
सिर्फ़ इसलिए आंख मूंदकर मुक्त कर दिया है
कि उसे पुराने महोदय ने बंदी बनाया था
और जिसे आज केवल दो मूठ चारा मिला था
क्योंकि मालिक का वेतन
सिर्फ़ इसलिए कट गया था
कि वह अवैधानिक रूप में बीमार पड़ गया था
दरअसल उसे पता नहीं था
कि अस्थायी नौकर को
बीमार पड़ने का हक़ नहीं होता
और चारे का भाव इसलिए बढ़ गया था
ताकि नया महोदय
मूल्यवृद्धि के निदान पर विचार कर सके
और उस कमरे में प्रकाश नहीं था
क्योंकि देवताओं का अभिशाप है
कि प्रकाश की व्यवस्था करने वाले लोग
हमेशा लापरवाही बरतेंगे
और उन पर गालियों का असर नहीं होगा

बकरा रात भर
उमस, भूख और अंधकार से लड़ता रहा
पर उन घड़ियाली दीवारों के काले जबड़ों में वह
दबता चला गया

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

जिन पर एक युग में
एक खिड़की की कृपा भी नहीं हो सकी
और सुबह जब
बारिश बन्द हो गयी
दरवाज़ा खुल गया
कोठरी में चारा डाल दिया गया
और एक देवता ने अपनी कृपा के रथ पर
प्रकाश के एक बच्चे को
उस कोठरी में भेजा
तो देखा गया
कि वह बकरा
मात्र किसी महोदय के नाम पर
उत्सर्ग हो गया था

7.4.77

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

जंगल की आग

पेड़ों को
इस बात में अब
कोई रुचि नहीं रह गयी है
कि आग का देवता
किसी बूढ़े को बनाया गया
या किसी जवान को

पेड़
जानते हैं
जंगल में लगने वाली
आग की हक़ीक़त
और समझते हैं
देवत्व का रहस्य

अतः वे
खरगोशों की तरह
यह नहीं तय करते
कि प्रतिदिन एक पेड़
जलेगा अपने इष्ट के लिए
और प्रतिहिंसा में
किसी बूढ़े दरख़्त का
इंतज़ार किया जाएगा
बल्कि वे
अपनी डालियों में लगे
घोंसलों को सचेत कर रहे हैं
कि देवता की कामना से पूर्व ही
उनमें एक जलता हुआ शोर हो
और जंगल
आग से नहीं
उसके विरोध से सुलग उठे

5.6.80

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

कबूतरी का विलाप

मेरे नन्हें छौने
जब वह पंजा
कपड़े में उंगलियां छिपाए
घर के अन्दर पहुंचा था
तब मुझे
सिर्फ़ अपनी ही जान की चिन्ता हुई थी
और लगा था
कि आज शाम से ही
हवा जो सर्द हुई थी ज्यादा
वह मेरे ही लिये थी
दुनिया में
जो कुछ भी अपशकुन घटा था
वह मेरी ही निस्बत था
और मैं उड़ गयी थी

तब मैं क्या जानती थी
कि आदमी का पंजा
तुझ जैसे छौने को भी मसल सकता है
जिसके मांस का कोई उपयोग नहीं है

मेरे छौने
अभी तो तुम्हारे बदन पर
ठीक से रोएं भी नहीं उगे थे
तुम तो अभी चलना भी नहीं जानते थे
तुम्हें तो अभी
दाना चुगने का भी शऊर नहीं था
तुम्हारे मुंह में जब मैं
कोई चीज़ डालती थी
तो उसे भी तुम गिरा देते थे
अभी तो तुम

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

यह भी नहीं जानते थे
कि मातम क्या होता है
तुम्हारे पिता को जब
हाल ही में किसी ने पकड़ा
तो तुम चीखे भी नहीं
तुमने सिर्फ़ चीं चं करके
कुछ जानना चाहा
पर मेरे क्रन्दन को तुम
अन्त तक नहीं समझ सके
अभी तो तुम
यह भी नहीं जानते थे
कि हमारे घर का एक सदस्य
कम हो गया है
सूनापन क्या होता है
विधवापन क्या होता है
यतीमी भी क्या होती है
तुम कुछ तो नहीं जानते थे मेरे लाल !
और उस पंजे ने तुम्हें
मसल दिया

जरूर वे रहे होंगे कई जन
और बना दी होगी उन्होंने कोई लम्बी योजना
फिर उनमें से एक ने
किया होगा हमला हमारे घर पर
वह सब किस तरह हुआ
मुझे कुछ भी नहीं मालूम मेरे लाल !
मुझे बस इतनी सी याद है
कि मैं डर गयी थी बेहद उस वक्त
और सोच गयी थी बहुत कुछ
उस एक ही क्षण में
कि किस तरह मुझे पकड़ कर लोग ले जाएंगे
और किस तरह मेरे परों को बांधकर
फिर मुझे टोकरी के नीचे दबाएंगे

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

और बिल्ली से बचाने के लिये
ऊपर रखेंगे भारी पत्थर
और सुबह-सवेरे
एक तेज़ छुरी की धार
मेरी गर्दन पर रेंग जाएगी
और डर से मेरे पंख फड़फड़ा उठे थे

हालांकि मैं भूल गयी थी
कि मैं चिड़िया हूं
स्त्री नहीं
कि करेंगे मुझसे बद्तमीज़ी ये लोग
लेकिन मेरा मादा मन
कंपकंपा गया था बेहद उस वक्त
और मैं उड़ गयी थी

मैं मानती हूं
कि इस जगह मैं आदमी से हार गयी थी
सुना है उसकी स्त्री
नहीं छोड़ती अपने बच्चे को इस तरह
अपनी जान बचाने के लिये
लेकिन यह मैंने नहीं सुना था
कि आदमी
सिर्फ़ अपने ही बच्चे को बच्चा समझता है

मेरे लाल !
अगर मैं यह जानती
कि तुम्हारी नन्हीं गर्दन पर भी
तरस नहीं आएगा
छापामारों को
तो अपने पंखों में तुम्हें मैं छिपा लेती
खुद की गिरफ्तारी देकर तुम्हें बचा लेती

लेकिन मैं उड़ गयी थी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

इन दीवारों के भरोसे तुम्हें छोड़कर
जिनके कोटरों में हम
पुश्त-दर-पुश्त से रह रहे हैं
और जिनकी पवित्रता ने इस इमारत को
पूजाघर बनाया है

हम तो पूजाघर के वासी हैं मेरे लाल !
जिसका यहां सजदा होता है
या जिसका यहां नैवेद्य चढ़ता है
वह कहां चला गया था उस क्षण
जब उसके नन्हें पुजारी की गर्दन
एक आततायी पंजे में कसमसा रही थी

यह सवाल उससे तुम ज़रूर पूछना मेरे छौने
अगर तुम्हारी भेंट हो जाए उससे
या इस ज़िन्दगी के बारे में जब
कोई सवाल किया जाए तुमसे

18.1.82

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

टिड्डी दल

ये टिड्डी दल कहां कहां से उड़कर चले आते हैं
सूर्य को अपने शिविर में क़ैद कर लेते हैं
और कविता की क्यारी में बेरोकटोक घुस जाते हैं
ये शब्दों को चरते हैं और अर्थों के बीज निकाल लेते हैं
विचारों के डण्ठल कुतर डालते हैं
और फलियों के खोखल छोड़कर उड़ जाते हैं

ये टिड्डी दल बाहर से नहीं आते
इन्हीं घाटियों में इनकी सेना रहती है
जहां ठाकुर साहब का घोड़ा चरा करता है

कविता की हरी-भरी क्यारियों का पता
क्या घोड़ा ही देता है टिड्डयों को

अगर इस बात की सत्यता सिद्ध हो जाय तो कवियो !
टिड्डयों को नहीं, घोड़े को हलाल करो

10.8.79

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

शिकारी आएगा

शिकारी आएगा
पैरों में गमबूट पहने
और कंधों पर बंदूक लटकाए
बालों को हैट से ढंके
शिकारी आएगा

जंगल के प्राणियों को
यह बात मालूम है
मालूम है
कि शिकारी आएगा
और उनके बच्चों के लिये
जेब में लिबिनचूस लाएगा

वे जानते हैं
कि बच्चे
लिबिनचूस चूसेंगे
और वे
शिकारी की बंदूक साफ करेंगे
उनकी स्त्रियां
शिकारी के लिए
भोज का प्रबंध करेंगी

शिकारी
मचान पर बैठकर
किस्सा सुनाएगा
पहेली बुझाएगा
हंसाएगा
और हंसी-हंसी में
बंदूक का
घोड़ा दब जाएगा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

जंगल में
एक चीत्कार उभरेगा
फिर सब कुछ
शांत हो जाएगा
और चारों ओर
शिकार के नमूने बिखर जाएंगे
बच्चे, मादाएं और नर

यह रहस्य सिर्फ़
एक जंगली मुसहर को ज्ञात है
शायद इसीलिए वह
पत्थर पर
अपनी कुल्हाड़ी दे रहा है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

पलाश के हत्यारे वर्ण

आकाश में वह झील
फिर उग आयी है
जिसके किनारे
कुछ शब्द कल काटे गये थे

उनके सिर
जल पर उतरा आये हैं
और टापुओं के पास
घासों में फंस गये हैं
मछलियां उन्हें नोंच रही हैं
सिरों में
केवल होंठों के बेजान चिह्न हैं
उनकी ध्वनियां
निकाल ली गयी हैं

शब्दों के धड़
झील के पार
क्षितिज बन गये हैं
और क्षितिज
पलाश के हत्यारे वर्ण में
डूब गये हैं

7.8.77

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

नीला आदेश

ज़रूरत जब जब पड़ी
लोगों के सामने मैं
नंगा होकर ही आया
फिर भी लोग
शक करते रहे मुझ पर
कि ख़ुद को मैंने
छिपा रखा है कहीं

और मेरी धरती को लोग
चीरते रहे
फाड़ते रहे मेरा आकाश
करते रहे तफ़तीश मेरी नदी की
और कठघरे में खड़ा करके सूर्य का
लेते रहे बयान

कि मुजरिम का वह जिस्म कहाँ गया
जिसे कंबल में लपेटा गया था
इस पर तो कोड़ों के निशान हैं
जो असली नहीं लगते

और मैं पुकारता हूं उस तारीख़ को
जिसके पास
मेरी नग्नता की सनद है
लेकिन लोग उसे
कैलेण्डर से निकाल चुके हैं

मैं झकझोरता हूं ख़ुद को
जिससे अपने जिस्म की सचाई
साबित कर सकूं
तो लोग एक बारगी पंक्तिबद्ध हो जाते हैं

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

और हवा में
एक आदेश लहराता है
मुस्कराओ !

एक नीला आदेश
जिसके रूबरू
मेरे पीले होंठ
लगातार ऐंठते रहते हैं
और ऐंठते ऐंठते
हरे हथियार में
बदल जाते हैं

4.2.80

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

खोया हुआ सूर्य

हम दिन भर पटाखे बजाते रहे
शाम को बैठ गये एकत्र करने
बम और बान के खोखे
इन खोखों को अब हम
पागलों की तरह जेब में भरे घूमेंगे
और मुल्क की चट्टानों को बताएंगे
कि आज दिन भर यहां
टूटता रहा है सन्नाटा
कि आज दिन भर यहां
बदलता रहा है इतिहास
कि आज दिन भर यहां
जारी रही है
खोए हुए सूर्य की तलाश
और इस तरह हम
संभाल लेंगे उनका नेतृत्व
जिनके बच्चों के कान
आज दिन भर यहां बन्द रहे हैं
और जिनके झोपड़ों की फूस
आज दिन भर यहां जली है

12.7.80

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

बहुरूपिया

जी हां
पहले वह
बहुरूपिया नहीं
एक साधारण आदमी था
मेरी आपकी तरह
तब उसका
नया नया ब्याह हुआ था
और घोड़े पर
उसके पीछे बैठकर
एक अदद औरत आयी थी
जिसने उसकी कोठरी को
सराय में बदल दिया था
और वह
नेताजी के लिये चंदा वसूलते वसूलते
दूकानदार हो गया था

जी हां
उसकी दूकान से आप
अपनी बेटियों के लिये
बालियां खरीद सकते थे
और अपने लिये अंगूठियां भी
फिर नेताजी की कृपा से
उसकी पेटी थाने में चली गयी थी
और अगले दिन वह
अगरबत्तियों की महक उड़ाता
संकरी-चौड़ी गलियों में घूमने लगा था
लेकिन जल्दी ही उसे पता चल गया
कि लोगों को अभी
अगरबत्तियों की भूख क़तई नहीं है
और रोटियों को वह

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

अपने थैले में डालकर नहीं घूम सकता
अतः वह
एक चबूतरे पर बैठकर आमलेट बनाने लगा
लेकिन अण्डों ने अचानक विद्रोह कर दिया
और उसे ज्ञान हुआ
कि गर्मी आ गयी है
और ये गर्मियां अब
फ्रिज़ की शौकीन हो गयी हैं
अतः अण्डों की जगह नायलोन के तारों ने ले ली
और अगले दिन से
उसके कंधों पर रंग बिरंगे थैले लटकने लगे
परन्तु यहां के लोगों के पास
थैलों में रखने के लिये कुछ रहा ही नहीं
अतः उसने चश्मे खरीदे
और छाती पर एक रंग-बिरंगी झील लहराने लगी
लेकिन उसने देखा
कि यहां के लोग न अंधे हैं
न इनकी आंखों में गर्मी है
और तब वह
शीशियों में भरी एक दवा लेकर
फुटपाथ पर पहुंच गया
उसने अपनी आवाज में सेक्रीन घोल ली
पर बावजूद एक लम्बी भीड़ के
उसे मालूम हुआ
कि यहां के लोगों को कोई रोग नहीं है
सिवा तमाशा देखने के
जिसका कोई इलाज नहीं है
और रात ही रात में
वह धार्मिक हो गया
सुबह उसे
लोबान की धूनी लिये दूकानों पर देखा गया
और जब उसे पता चला
कि अब लोग भिखारियों पर विश्वास नहीं करते

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

तब वह चिढ़ गया
और दूसरों को चिढ़ाने के लिये
पांवों में घुंघरू बांधकर नाचने लगा
लोगों को मज़ा आया
तो वह हनुमान बन गया
लोगों की श्रद्धा उमड़ी
तो वह अंग्रेज़ी बोलने लगा
लोग प्रभावित हुए
तो वह योगी बन गया
फुटपाथ पर उसने आसन लगाया
और दिन भर वहां भीड़ लगी रही
लोग टिप्पणियां करते रहे

इस प्रकार जब
उसका बाज़ार गर्म हो गया
तो एक दिन वह फुटपाथ पर लेट गया
लोगों ने
उसे छेड़ा
उस पर पैसे फेंके
पर वह ख़ामोश लेटा रहा

शाम हो गयी
भीड़ अपनी गुफा में घुस गयी
तो भी वह लेटा रहा
और आश्चर्य
कि सुबह
भीड़ जब पुनः अपनी गुफा से निकली
तो उसने देखा
कि वह उसी तरह लेटा था
भीड़ ने उसे छेड़ा
उस पर कंकड़ मारे
लेकिन वह चुपचाप लेटा रहा
भीड़ ने

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

उसकी इस हरकत को
एक महत्वपूर्ण कला की संज्ञा दी
और फिर अपनी गुफा में घुस गयी

तब उस दूसरी रात में
कुत्तों ने उसकी शिनाख्त की
और जब उन्हें मालूम हुआ
कि वह
बहुरूपिया नहीं
एक आदमी था
तो उसे वे
रेलवे की ओर उठा ले गये
और चूंकि उस शरीर से
आने वालो गंध
कुत्तों के अनुकूल थी
अत: उन्होंने उसका सदुपयोग किया
और जातीय आवेश में आकर
उसकी जय बोलने लगे

25.2.79

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

वृक्ष-विरोध

यह बहुत अजीब बात है
कि कभी कभी लोग यहां
जोश में आ जाते हैं
और बेजान नक्शे पर
इस तरह थिरकते हैं
जैसे भूख से बेहोश मां की छाती पर
नन्हा बेटा
यह सोचे बग़ैर कूदता है
कि ख़ाली पेट को रंगमंच बनाना
आचार-संहिता के सर्वथा विरुद्ध है

थिरकन के बाद
जोश में आये लोग
पूजन की मुद्रा में नज़र आते हैं
जबकि उन्हें जानना चाहिये
कि पूजा चाहे वृक्षवासी स्वयंभू की हो
चाहे नर की
पूजा एक तीसरे दर्जे की हीनता है

वैसे हीनता का दर्जा अब
कुछ और उतर गया है
क्योंकि बहुत से नर भी अब
स्वयंभू-सम्प्रदाय में दीक्षित हो गये हैं
और उसी वृक्ष पर
बसेरा करने लगे हैं
अतः पूरे वृक्ष का विरोध जरूरी हैं
लेकिन विरोध जो हो रहा है
उसका तरीक़ा ग़लत है
दोस्तो !
फुनगी का विरोध

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

तब तक निरर्थक है
जब तक तुम्हारे और तने के बीच
दुरभिसंधि की कोई सड़क है

इस सड़क को तोड़ो
और तने के तहखाने में
छिपे हुए बीजगणित को
दोनों हथेलियों में दबा कर निचोड़ो
तुम्हारे नक्शे में जान आ जाएगी
और लोगों का चरित्र
नक्शे पर जब भी उतरेगा
छन कर उतरेगा

16. 6. 77

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

फ़र्माने ख़ुदावन्दी

मैं दुनिया का ख़ुदा
तुम दुनिया वालों के लिए
एक नयी किताब भेज रहा हूं

यह किताब
और सिर्फ़ यही किताब
मेरी असली किताब है

इस पर ईमान लाओ
और मेरे गुस्से से बचो
मेरी दोज़ख से डरो

हे लोगो !
मैंने अब तक
तुम्हारे लिए कोई पैगाम नहीं भेजा है
न मेरा कोई पैगम्बर है, न दूत
ये सारे के सारे लोग
तुम्हारे दुश्मन थे
जिन्होंने तुम्हें बहकाया था

हे दुनिया वालो !
बहकने वालों को'
मैं सख़्त से सख़्त सज़ा देता हूं

लोगो
अपने कानों को खोल लो
दिलों को साफ कर लो
और मेरे फ़र्मान को सुनो

सुनो

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

कि पैगम्बरों की बातें
तुम्हें बहकाने वाली हैं
आदमी को
आदमी के साथ साज़िश करने का
मैंने कोई हुक्म नहीं दिया है
इबारत के लिए
मैंने कोई शर्त नहीं रखी है
मैंने न किसी को गरीबी दी है
न अमीरी बांटी है

चूंकि मैंने
आदमी को जन्नत से निकाला है
इसीलिए उसने
मेरे नाम पर
तमाम गलत बातें फैलाईं

ऐ लोगो !
मेरे मज़हब का नाम है
बगावत
बगावत उन तमाम चीज़ों के खिलाफ
जो तुम्हें शैतान बनाती हैं
जो तुम्हें हैवान बनाती हैं
मैंने तुम्हें इंसान बनाया है

ऐ इंसानो !
उठो
बाहर आकर देखो
तुम्हारे हक़ के सूरज को
जिन्होंने अपने आसमान पर चमका रक्खा है
उनके आसमान को
तुम नोच लो
मैं तुम्हारे साथ हूं
न भूलो

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

कि खुदा हरदम तुम्हारे साथ है
हालांकि
वह सिर्फ तुम्हारी हिम्मत का नाम है

22. 11. 80

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

नयी सृष्टि का जन्म

आदमी अब
साथी का जीवन नहीं जी सकता
हर उस क़दम का विरोध वह
इसीलिए करता है
जिसके चिह्न में
अंकुश का चित्र दिखाई पड़ता है

आदमी का विरोध
युद्ध के रूप में तब्दील हो रहा है
बेटा बाप से लड़ रहा है
शिष्य गुरु से
पत्नी पति से
और जनता प्रधानमंत्री से

धरती पर रिश्ते
चीथड़ों की तरह पड़े हैं
अब कोई आदरणीय नहीं रहा
आदरणीया सिर्फ स्वतंत्रता है
जिसकी तलाश ज़ारी है
शिद्दत से
लेकिन तलाश पूरी होने पर
नैवेद्य से उसकी पूजा नहीं होगी
उसकी शान में
स्तोत्र नहीं गाए जायेंगे

उसे मुख्य द्वार पर खड़ा कर दिया जाएगा
जहां उसका उत्तरदायित्व होगा
कि गुलामी को वह
भीतर जाने से रोके
और आदमी निश्चित होकर काम करेगा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

पर लापरवाही बरतने पर
वह दण्ड की भागिनी होगी
आदमी फिर
स्वतंत्रता पर विश्वास नहीं करेगा
वह पूरी दुनिया को
पीस कर पी जाएगा
और नए सिरे से
फिर एक आदम को जन्म देगा
जिसे ज्ञान और पाप नामक शब्दों से
मुक्त रखेगा
और उसकी पसलियों से
एक नयी स्वतंत्रता की रचना करेगा

नया आदम और नयी स्वतंत्रता मिलकर
नयी सृष्टि को जन्म देंगे
जिसमें युद्ध और अस्त्र से
सब अपरिचित होंगे

26.5.77

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

चाकू पर रखी कविता

कविता आज फिर चाकू पर रख दी गयी
और उसकी देह पर
कांटे उग आये
नसों में क़ैद आग ने फिर हरकत की
फिर आग पर टपका लहू
जिसकी शक्ल
वनमानुष के लहू से मिलती थी

सहसा
कविता के पहले शब्द की भ्रू
गरजने लगी
और ध्वनियों की एक फ़ौज
चाकू के मुकाबले खड़ी हो गयी

और
कविता जब चाकू पर से उठी
चाकू भोथरा हो चुका था

1977

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

मालिकाना सलूक

तुम्हें वही आत्मा की आवाज़ सुनाएंगे
जिनके जन्म के लिये
बापों की आवश्यकता नहीं पड़ी[1]
जिनके शैशव की रक्षा के लिये
सूखे स्तनों में दूध भर गया[2]
जिनकी भूख के लिये
सूखी टहनियों ने फलों की बारिश की[3]
और जिनकी प्यास के लिये
धरती पर चरण मारने से
जल के स्रोत फूटे[4]

यहां तो मुझे जन्म देने के लिये
मेरे बाप ने साहूकार से क़र्ज़ लिया
पैदा होते ही मां के स्तन सूख गये
भूख के लिये उसे
गांव की कच्ची सड़क पर
रेजा बनना पड़ा
और प्यास के लिये
राहत-कार्य वाली गाड़ी के नीचे
बाल्टी लेकर घण्टों खड़ा होना पड़ा

अतः मुझसे आत्मा की आवाज़ मत मांगों

---

1. जैसे : ईसा मसीह।
2. हज़रत मुहम्मद को दूध पिलाते वक्त बूढ़ी ढाई हलीमा के स्तनों में दूध भर जाने की कथा प्रसिद्ध है।
3. सद्यः प्रसूता मरियम (ईसा मसीह की मां) के लिये खजूर के सूखे पेड़ से ताजे फल गिरने की बात कही है।
4 हज़रत इब्राहीम के बेटे हज़रत इस्माईल की प्यास के लिए ऐसे चमत्कार का उल्लेख मिलता है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

मैं अपनी थैली में सिर्फ़
शरीर की आवाज़ रखता हूं
जिसे उन ख़ुदाओं और पैग़म्बरों की
वादियों में बिखेरता हूं
जिन्होंने मेरे साथ
निहायत मालिकाना सलूक किया है

17. 3. 77

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

पेड़ या आदमी

पेड़
जो बिना सींचे भी हरा रहता है
उस आदमी से बेहतर है
जो कविता लिखकर
या पढ़कर भी ईमानदार नहीं बनता
देश को
यदि तख़्तों की आवश्यकता हो
तो उसे चाहिये
कि वह
पेड़ों की जगह
ऐसे आदमियों को कटवाए

6. 8. 79

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

छोटे-बुतों का बयान

ओ इब्राहीम !

तुमने जो कुछ कहा था
ठीक ही कहा था[1]
लेकिन तुम्हें
आग के जंगल से गुज़रना पड़ा[2]
यद्यपि तुमने
उस लड़ाई को
आत्म बल के सहारे
लड़ लिया था
पर हमारा भी कुछ कर्त्तव्य होता था

हमारे बयान से
तुम्हें मदद मिल सकती थी

लेकिन हम मजबूर थे इब्राहीम
तब हमारे पास ज़बानें नहीं थीं
हम निरे बुत थे
पत्थर के
हालांकि हम बुद्ध थे
पर धार्मिक दांव-पेंच में फंस कर
बुत हो गये थे[3]

---

1. यहां इस मिथक की ओर संकेत है जिसके अनुसार काबे में रखे हुए सभी छोटे बुतों को हज़रत इब्राहीम (इनका समय हजरत मुस्म्मद से पूर्व का है) ने तोड़ दिया था और पूछने पर कहा था, 'इन छोटे बुतों को इसी बड़े बुत ने तोड़ा है जिसके कंधे पर कुल्हाड़ी रखी है।' हालांकि कुल्हाड़ी उन्होंने स्वयं उसके कंधे पर रखी थी। लेकिन कविता के अंतर्गत, प्रचलित मिथक में कुछ परिवर्तन कर लेना मैं जायज़ समझता हूं। जबकि यह कविता सिर्फ़ कविता है, मिथकीय कविता नहीं।
2. हजरत इब्राहीम को आग में डाला गया था।
3 बत (फ़ारसी) शब्द की व्युत्पत्ति बुद्ध से है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

और जब हम
पत्थरों में न्यस्त हुए
हमारी ज़बानें
घिस दी गयीं

ताकि हम
अपने शिल्पियों के ख़िलाफ़
कुछ कह न सकें
हमारे सामने अनर्थ होता रहे
और हम अर्थ को पत्थर किये रहें

लेकिन अब
हमारे भीतर ज़बानें उग आयी हैं

वैसे इन्हें तुम
दूब भी समझ सकते हो[1]

इनकी नुकीली सचाई ने
हमारे भीतर बोलने की ताक़त पैदा की है
और हम अपना बयान दे रहे हैं
कि हमें अपाहिज
तुमने नहीं बनाया था
वह बड़ा बुत
जिसके कंधे पर कुल्हाड़ी थी
वही हमारा हत्यारा था
उसी ने हमारे हाथ-पांव तोड़े थे
उसी ने हमारी नाक काटी थी
और चूंकि तुमने
उसी का नाम लिया था
इसीलिये तुम्हें आग के जंगल से गुज़रना पड़ा

1. 'पत्थर में दूब उगना' एक मुहावरा है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

हमारे प्यारे इब्राहीम !
वह बड़ा बुत अभी मरा नहीं है
आज भी वह
हमारे बच्चों को कुल्हाड़ी दिखाता है
और तुम्हारे समर्थकों को
आग का जंगल
पहले भी उसका रिश्ता
क़बीले के सरदार से था
अब भी है

कुछ तो नहीं बदला है इब्राहीम
न क़बीला
न सरदार
न बड़ा बुत
न छोटा बुत
तुम लौट आओ इब्राहीम
हमारे बयान को सुनो
और उस बड़े बुत के खिलाफ़
लड़ो
जिसके कन्धे पर
मुद्दतों से कुल्हाड़ी रखी है

1978

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

ठोस बांस

बेहोश होते सूरज की
आंखों के आगे
बिछी लाल-पीली रेखाओं पर
पट पड़े
पीठ पर धंसे
बांस के बारे में
उसने याद किया

कि ठाकुर ने इसे
पिछले साल मंगाया था

और भी
कि ठोस बांस का अर्थ
'लाठी' होता है
कि लाठी में छिपी
बांस की महक में
बेसुध हुए ठाकुर को
याद ही नहीं रहा
कि बांस में
उसके बच्चों का पेट
लिपटा है
और बांस चूंकि ठोस है
अतः भूख जैसी छोटी चीज़ भी
उसमें गुम नहीं की जा सकती

और साल भर
ठाकुर ने
बांस को तेल से नहलाया
सिंदूर से मालिश की
इसी दिन के लिये

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

ताकि वह पेट की याद दिलाए
और उसी का दिया बांस
उसी की पीठ पर
धंसा दिया जाय

उसकी आंखों में
हरा हरा बांस लहराने लगा
और लगा
कि वह
हरे ख़ून में लतफत है
ख़ून जम रहा है
और धीरे-धीरे
वहां
एक ठोस बांस उग रहा है
संभवत:
आगामी लाठी के लिये
जो उसके बच्चों की पीठ पर
धंसेगी
या ठाकुर की
नहीं मालूम

12.6.78

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

इस समुद्र में

इस समुद्र में
मछलियों के सिर्फ़
दो ही हितैषी हैं
एक का नाम है
घड़ियाल
और दूसरे का
आक्टोपस

मछलियां अपना जिस्म
कभी घड़ियाल को सौंपती हैं
कभी आक्टोपस को
और हर बार वे समझती हैं
कि इस बार
हमारे गलफड़ों में फंसी कटिया
निकाल दी जायगी

लेकिन हर बार उनके जिस्म का मांस
कुछ कम हो जाता है
और कटिया
ज्यों की त्यों फंसी रहती है
किनारे पर बैठे मछुवे की डोर
कसती जाती है
और मछलियां
सोच ही नहीं पातीं
कि अपना हितैषी
हमें अपने बीच से निकालना चाहिये

संभव है अब सोचें
और इस समुद्र में
कोई तहलका मचे

29.1.80

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

पागल

वह जब
पेट को पीटता है
करता है इस्तेमाल
नाख़ूनों का
धरती को चीरने के लिये
उंगलियों से
निचोड़ता है अपने केश
कि पहेलियों का
पता चले
और तोड़ता है अपना चेहरा
गुफा के पत्थरों से
दांतों की प्रदर्शनी में
जीभ की लालिमा का रहस्य
खोलता है
लहू के शब्दों से
कुर्ते को ध्वज बनाकर
गाता है वंदेमातरम्
और लुंगी को काटकर
बनाता है बन्दनवार
मुट्ठियों में
वक़्त का पत्थर भरे
ढूंढ़ता है
इतिहास के शीशमहल
और राजमार्ग पर
बेहिचक थूकता है
संस्कृति का मवाद
भूंकता है
मुल्क का चरित्र
और दीवारों पर
खींचता है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

कविता का धनुष
तो लोग कहते हैं
कि वह पागल हो गया है

6.4.80

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

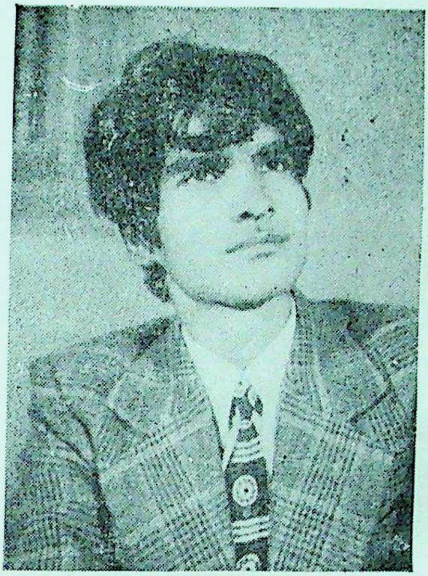

अब्दुल बिस्मिल्लाह

जन्म : 5 जुलाई 1949 ई.।
इलाहाबाद ज़िले के बलापुर नामक गांव में।
शिक्षा : एम. ए. (हिन्दी), डी. फ़िल्।
इलाहाबाद विश्वविद्यालय से।
व्यवसाय : कुछ दिनों तक मित्र प्रकाशन, इलाहाबाद के सम्पादकीय विभाग से सम्बद्ध रहने के पश्चात् अब अध्यापन। सम्प्रति वाराणसी में।
अध्यापकों के आंदोलन में भाग लेकर दिसम्बर सन् 1977 में जेल-यात्रा भी की।
प्रकाशन: पहला कविता-संग्रह **मुझे बोलने दो** सन् 1977 में प्रकाशित तथा उ० प्र० हिन्दी संस्थान द्वारा पुरस्कृत।
कुछ कविताएं **त्रयी-2** नामक संकलन में संकलित तथा कुछ अंग्रेज़ी में अनूदित। कहानी-संग्रह **कितने कितने सवाल** तथा **टूटा हुआ पंख** प्रकाशित।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation